अध्याय 44

संकट में बिन्यामीन

यूसुफ़ अपने छोटे भाई को फिर से देखकर अति आनन्दित हुआ, लेकिन वह अन्य भाइयों की सत्यनिष्ठा और भाईचारे की परीक्षा लेता रहा। क्या वे सत्य का आदर करेंगे, चाहे इसके लिए उन्हें अपने पापों का उसके सामने अंगीकार ही क्यों न करना पड़े? एक दूसरे के लिए त्याग की भावना को दिखाते हुए, क्या वे एक साथ होकर खड़े रहेंगे? क्या वे याकूब के चहेते पुत्र बिन्यामीन के प्रति अपना व्यवहार उस व्यवहार से अधिक अच्छा रखेंगे जैसा उन्होंने यूसुफ़ के प्रति रखा था?

चाँदी के कटोरे की घटना (44:1-17)

परीक्षा (44:1-5)

[1]तब उसने अपने घर के अधिकारी को आज्ञा दी, कि "इन मनुष्यों के बोरों में जितनी भोजनवस्तु समा सके उतनी भर दे, और एक एक जन के रूपये को उसके बोरे के मुंह पर रख दे। [2]और मेरा चांदी का कटोरा छोटे के बोरे के मुंह पर उसके अन्न के रूपये के साथ रख दे।" यूसुफ़ की इस आज्ञा के अनुसार उसने किया। [3]भोर होते ही वे मनुष्य अपने गदहों समेत विदा किए गए। [4]वे नगर से निकले ही थे, और दूर न जाने पाए थे, कि यूसुफ़ ने अपने घर के अधिकारी से कहा, "उन मनुष्यों का पीछा कर, और उन को पाकर उन से कह, कि 'तुम ने भलाई के बदले बुराई क्यों की है? [5]क्या यह वह वस्तु नहीं जिस में मेरा स्वामी पीता है, और जिस से वह शकुन भी विचारा करता है? तुम ने यह जो किया है सो बुरा किया'।"

आयत 1. भाइयों की अन्तिम परीक्षा भी वैसे ही आरंभ हुई जैसे कि पहली हुई थी, जो रुपये उन्होंने अन्न खरीदने के लिए दिए थे उन्हें उनके बोरों में रख दिया गया (42:25)। फिर से **यूसुफ़ ने अपने सेवक को आज्ञा दी कि उनके बोरे में जितनी भोजनवस्तु समा सके उतनी भर दे**। साथ ही उसने निर्देश दिया कि **प्रत्येक जन के रुपये भी उसके बोरे के मुँह पर रख दे**।

आयत 2. इस बार, यूसुफ़ ने अपने सेवक से कहा कि उसका **चाँदी का कटोरा छोटे के बोरे के मुँह पर उसके अन्न के रुपये के साथ रख दे**। सेवक ने अचरज

किया होगा कि "मेरा स्वामी इन इब्री पुरुषों को फिर से चोरी के दोष के लिए तैयार क्यों कर रहा है? वह क्यों यह चाहता है कि सबसे छोटे को शासक के चाँदी के कटोरे की चोरी के गंभीर आरोप का दोषी समझा जाए?" निःसन्देह, सेवक अपने स्वामी से प्रश्न करने की स्थिति में नहीं था; उसका काम था कि बस उसकी आज्ञा का पालन करे, इसलिए **जैसा यूसुफ़ ने कहा उसने किया**।

यद्यपि सेवक नहीं जानता था कि क्या हो रहा है, प्रेरणा से लिखा गया यह लेख दिखाता है कि यह परीक्षा उन दस भाइयों के अपने सबसे छोटे भाई, बिन्यामीन के प्रति सच्चे रवैये को प्रगट करने के लिए थी। क्या वे बिन्यामीन के विरुद्ध हो जाएंगे जैसे वे बहुत समय पहले यूसुफ़ के विरुद्ध हो गए थे? यूसुफ़ ने ठान लिया कि वह भाइयों पर दबाव को बढ़ाएगा और देखेगा कि वे याकूब का प्रिय बनने में बाधा होने वाले अन्तिम अवरोध: राहेल के अन्तिम पुत्र बिन्यामीन, को हटाने के अवसर का क्या करते हैं।

आयत 3. अगली प्रातः, भोर के समय, **उन पुरुषों** को, उनके लदे हुए **गदहों सहित**, कनान के लिए **विदा किया** गया। लग रहा था कि सब कुछ ठीक चल रहा है: निःसन्देह वे आनन्दित होंगे और अपने लक्ष्य के सफलतापूर्वक पूरे होने के लिए एक दूसरे को बधाई दे रहे होंगे। वे तो अपने भूखे परिवारों के लिए भरपूरी से अन्न गदहों पर लाद कर जा रहे थे, शिमोन को भी बन्दिगृह से छोड़ दिया गया था, और बिन्यामीन की भी कोई हानि नहीं हुई थी और उसे शीघ्र ही उसके पिता को लौटा दिया जाना था।

आयतें 4, 5. वे नगर के बाहर पहुँचे ही थे और अधिक दूर नहीं जाने पाए थे जब **यूसुफ़** ने अपने **घर के अधिकारी** से कहा **उन मनुष्यों का पीछा कर**, और उनको पाकर, उन से कह, **"तुम ने भलाई के बदले बुराई क्यों की है?"** (देखें भजन 35:12; 38:20; 109:5; नीति. 17:13.) दूसरे शब्दों में, उसे कहना था, "मेरे स्वामी ने तुम्हें भव्य भोज कराया और प्रचुर मात्रा में अन्न बेचा, परन्तु तुमने उसकी उदारता का प्रत्युत्तर उसके इस महत्वपूर्ण चाँदी के कटोरे के चुराने से दिया है।" अधिकारी को कटोरे को पहचानते हुए पूछना था **"क्या यह वह वस्तु नहीं जिस में मेरा स्वामी पीता है, और जिस से वह शकुन भी विचारा करता है?"** फिर उसे उन्हें कहना था, **"तुम ने यह जो किया है सो बुरा किया।"**

वास्तव में इब्रानी लेख की आयत 4 और 5 में "चाँदी का कटोरा" माना तो गया है परन्तु कहा नहीं गया है। अनेक अंग्रेज़ी अनुवाद (RSV; NRSV; NEB; REB; TEV; CEV; NLT) LXX का अनुसरण करते हैं, जहाँ यह प्रश्न "तुमने क्यों मेरा चाँदी का कटोरा चुराया है?"[1] सम्मिलित है।

प्राचीन निकट पूर्व के अन्य जाति मूर्तिपूजक लोगों में भावी कहना और शकुन विचारना सामान्य प्रथा थी, और उन्होंने इस विषय के भिन्न पहलुओं से संबंधित बहुत वृहत साहित्य तैयार कर रखा था।[2] लाबान ने, 30:27 में यह दावा किया कि उसने ऐसे ही जाना है कि यहोवा की आशीषें उस पर याकूब के कारण आई हैं। शकुन विचारने और गृह देवताओं के मध्य अन्धविश्वास का संबंध ही इस बात को स्पष्ट कर सकता है कि याकूब के दल में कई ने, जिनमें राहेल भी

थी (31:19), क्यों अपनी मूर्तियों को सुरक्षित बनाए रखा था, जब तक कि कुलपति ने उन्हें शेकेम में सिन्दूर के वृक्ष के नीचे गाड़ नहीं दिया (35:4)।[3]

मिस्र में, यूसुफ़ के समय में, यह मान लिया जाता था कि वज़ीर के पास शकुन विचारने का कटोरा होगा, जिसमें वह पानी, दाखरस, या तेल को मिलाकर महत्वपूर्ण राजकीय बातों के बारे में "हाँ" अथवा "नहीं" के उत्तर प्राप्त करता था। लोगों का यह भी मानना था कि उन द्रव्यों के संरूप के आधार पर केवल वज़ीर ही उन उत्तरों को समझ सकता था। यूसुफ़ के अधिकारी ने यह मान लिया कि उसका स्वामी इस कटोरे को इसी कार्य के लिए प्रयोग करता था। लेकिन यूसुफ़ पहले ही फ़िरौन को यह स्पष्ट कर चुका था कि स्वप्नों का अर्थ बताने और भावी कहने की योग्यता उसे केवल परमेश्वर ही से मिली थी (41:16, 25, 39)। यूसुफ़ के लिए, चाँदी का कटोरा उसके पद के प्रतीक से अधिक और कुछ नहीं था; लेख यह नहीं कहता है कि यूसुफ़ वास्तव में उस बहुमूल्य वस्तु को एक कटोरे के अलावा अन्य किसी कार्य के लिए प्रयोग करता था।

खोज निकाला जाना (44:6-13)

[6]तब उसने उन्हें जा पकड़ा, और ऐसी ही बातें उन से कहीं। [7]उन्होंने उस से कहा, "हे हमारे प्रभु, तू ऐसी बातें क्यों कहता है? ऐसा काम करना तेरे दासों से दूर रहे। [8]देख जो रूपया हमारे बोरों के मुंह पर निकला था, जब हम ने उसको कनान देश से ले आकर तुझे लौटा दिया, तब, भला, तेरे स्वामी के घर में से हम कोई चाँदी या सोने की वस्तु कैसे चुरा सकते हैं? [9]तेरे दासों में से जिस किसी के पास वह निकले, वह मार डाला जाए, और हम भी अपने उस प्रभु के दास जो जाएं।" [10]उसने कहा "तुम्हारा ही कहना सही, जिसके पास वह निकले वह मेरा दास होगा; और तुम लोग निरपराध ठहरोगे।" [11]इस पर वे जल्दी से अपने अपने बोरे को उतार भूमि पर रखकर उन्हें खोलने लगे। [12]तब वह ढूंढ़ने लगा, और बड़े के बोरे से लेकर छोटे के बोरे तक खोज की: और कटोरा बिन्यामीन के बोरे में मिला। [13]तब उन्होंने अपने अपने वस्त्र फाड़े, और अपना अपना गदहा लादकर नगर को लौट गए।

आयतें 6, 7. यूसुफ़ द्वारा 44:4, 5 में दिए गए निर्देशों को दोहराए बिना, यह आयत साफ़ कहती है कि उस अधिकारी ने भाइयों को जा **पकड़ा** और अपने स्वामी की **बातें उन से कहीं**। स्वाभाविक था कि भाई इस धमकी भरे दोषारोपण से स्तब्ध रह गए थे। इससे पिछले दिन में शासक के घर में हुई घटनाओं के संदर्भ में, उन्होंने उस पुरुष से पूछा कि वह उन **से ऐसे शब्द कैसे कह सकता है**। उन्होंने दावा किया कि ऐसे अतिथि-सत्कार का वे कैसे विश्वासघात कर सकते हैं और जैसा कहा जा रहा **वैसा** [विश्वासघाती] **कार्य** कैसे कर सकते हैं।

आयत 8. इसके साथ ही, भाइयों ने अपने पिछले व्यवहार के आधार पर दृढ़ता से अपने निर्दोष होने का दावा बनाए रखा: अपनी पहली यात्रा के बाद जो

रुपया उन्हें अपने बोरों में मिला था उसे वापस लौटा कर उन्होंने प्रमाणित किया था कि वे चोर नहीं हैं। उनका उत्तर सही समझ को दिखाता था; चोर चुराए हुए सामान को फिर से चुरा लेने के लिए लौटाते नहीं हैं। उन्होंने उससे पूछा, **"तब, भला, तेरे स्वामी के घर में से हम कोई चांदी वा सोने की वस्तु कैसे चुरा सकते हैं?"**

आयत 9. वे भाई अपने निर्दोष होने को लेकर इतने निश्चित थे कि उन्होंने उतावलेपन में असंगत प्रण दे दिया: **"तेरे दासों में से जिस किसी के पास वह निकले, वह मार डाला जाए, और हम भी अपने उस प्रभु के दास जो जाएं।"** बहुत समय पहले, उनके पिता ने भी ऐसा ही मृत्यु-दण्ड की आज्ञा अपने दल के किसी भी जन पर जिसने लाबान के गृहदेवताओं को चुराया हो जारी की थी, इस बात से अनभिज्ञ कि वे उसकी प्रिय राहेल ही के पास थे (31:31-35)। यद्यपि यह बात आवेश में कही गई थी, परन्तु भाइयों का यह कथन संकेत करता है कि उनमें परस्पर पारिवारिक निष्ठा पुनः जागृत हो रही थी; इस बात में वे सभी एक साथ खड़े रहने या गिरने को तैयार थे। अनजाने में ही भाइयों ने अपने आप को उसी दण्ड का भागी बना लिया था जिसका उन्हें तब भय हुआ था जब पहली बार उन्हें यूसुफ़ के घर में ले जाया गया: दासत्व (43:18)।

आयत 10. अधिकारी ने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और उत्तर दिया, **"तुम्हारा ही कहना सही।"** किंतु अधिकारी को यह दण्ड बहुत कठोर लगा, जैसा कि बाद में यूसुफ़ को भी लगा (44:17), इसलिए उसने उसे कुछ कम कर दिया: केवल दोषी व्यक्ति ही **दास** बनेगा, **शेष** सभी **निर्दोष** रहेंगे और स्वतंत्र जा सकेंगे। जो भी भाई दोषी पाया जाएगा उसे वही दण्ड भोगना पड़ेगा जो यूसुफ़ ने भोगा था: आजीवन दासत्व, स्वतंत्र होने की किसी भी संभावना से रहित।

आयत 11. भाई जानते थे कि अधिकारी का दोषारोपण निराधार है, इसलिए उन्हें कोई शंका नहीं थी कि वे पूर्णतया निर्दोष पाए जाएंगे। इसलिए उन्होंने फुर्ती की और: **अपने अपने बोरे को उतार भूमि पर रखकर उन्हें खोलने लगे।**

आयत 12. तब अधिकारी भाइयों के बोरों में ढूँढ़ने लगा। ढूँढ़ने के लिए इब्रानी शब्द (חָפַשׂ, *छापस)* है जो वही शब्द है जिसे लाबान द्वारा राहेल के तंबू को ध्यान पूर्वक खोजने के लिए प्रयोग किया गया है (31:35)। यहाँ पर भी सेवक ने बहुत ध्यान से ढूँढ़ा, **सबसे बड़े** भाई से आरंभ कर के **सबसे छोटे भाई पर समाप्त** किया। स्पष्ट है कि उसके पास बड़ा तीक्षण मस्तिष्क था और पिछली रात्रि के उनके बैठने का क्रम उसे स्मरण था (43:33)। एक बार फिर इससे भाइयों को अचरज हुआ होगा। उस अधिकारी के लिए यह कैसे संभव था कि लगातार दो बार वह उनके जन्म के क्रम को सटीक दोहराए? निश्चित है कि यह संयोगवश नहीं था। यूसुफ़ ने अपने भाइयों को भोजन के लिए बैठाने और फिर बिन्यामीन के बोरे में चाँदी का कटोरा रखने के निर्देष उसी क्रमानुसार दिए थे। चाहे अधिकारी इसमें से किसी बात का उद्देश्य नहीं जानता था, परन्तु वह उसे सौंपे गए कार्य के प्रति निष्ठावान था। उसने इस नाटक को इसकी समाप्ति तक

निभाया; फलस्वरूप, वह कटोरा बिन्यामीन के बोरे में मिला।

आयत 13. यह देखकर, भाइयों ने, अपने गहरे दुःख और भावनात्मक शोक को व्यक्त करते हुए **अपने वस्त्र फाड़े**। इस घटना से लगभग बीस वर्ष पूर्व, याकूब ने भी अपने दुःख और शोक में अपने वस्त्र फाड़े थे, जब उसे विश्वास दिलाया गया कि यूसुफ़ की मृत्यु हो गई है (37:33, 34)। अब भाइयों को भय हुआ कि उन्हें अपने वृद्ध पिता के पास लौट कर उन्हें बताना पड़ेगा कि बिन्यामीन का या तो देहांत हो गया है या वह मिस्र में दास है। जो भी हो, अब याकूब उसे फिर कभी नहीं देख सकेगा। उनका मानना था कि उनका पिता इस समाचार को सुनकर जीवित नहीं रहेगा; वह हृदय वेदना से मर जाएगा। इसलिए शोकित होकर उन्होंने अपने वस्त्र फाड़े। भाइयों के मध्य एकता के पहले संकेत से प्रगट है कि वे राहेल के अन्तिम पुत्र के बिना अपने पिता के पास लौट जाने के बारे में सोच भी नहीं सकते थे। इस परिस्थिति से एक नई विडंबना सामने आई: वे भाई यूसुफ़ को बिना किसी ग्लानि के दासत्व में बेचने के दोषी थे; इस बार वे किसी भी अपराध के दोषी नहीं थे किंतु बिन्यामीन के भविष्य को लेकर उन्हें गहरा दुःख था।

अन्य कोई विकल्प न होने के कारण, **उन्होंने अपना अपना गदहा लादा** और उनका दल **नगर को लौट गया**, इस धूमिल सी आशा के साथ कि शासक से उन्हें कुछ दया मिलेगी।

भाई यूसुफ़ के पास लौटते हैं और उन की ओर से यहूदा की विनती (44:14-17)

[14]जब यहूदा और उसके भाई यूसुफ़ के घर पर पहुंचे, और यूसुफ़ वहीं था, तब वे उसके सामने भूमि पर गिरे। [15]यूसुफ़ ने उन से कहा, "तुम लोगों ने यह कैसा काम किया है? क्या तुम न जानते थे, कि मुझ सा मनुष्य शकुन विचार सकता है?" [16]यहूदा ने कहा, "हम लोग अपने प्रभु से क्या कहें? हम क्या कहकर अपने को निर्दोषी ठहराएं? परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म को पकड़ लिया है: हम, और जिसके पास कटोरा निकला वह भी, हम सब के सब अपने प्रभु के दास ही हैं।" [17]उसने कहा, "ऐसा करना मुझ से दूर रहे: जिस जन के पास कटोरा निकला है, वही मेरा दास होगा; और तुम लोग अपने पिता के पास कुशल क्षेम से चले जाओ।"

आयत 14. अपने परिवार जनों के लिए भोजन सामग्री के साथ घर जाने की बजाए, यहूदा और उसके भाई यूसुफ़ के घर को लौट आए। अवश्य ही यूसुफ़ यह जानता था कि वे वापस आएंगे, क्योंकि उसने ही अपने अधिकारी की सहायता से यह सारा प्रकरण बिछाया था। यहाँ वाक्यांश "भाइयों" के प्रयोग का "यहूदा और उसके भाइयों" के प्रयोग से परिवर्तित होना याकूब के चौथे पुत्र द्वारा नए अगुवे की बागडोर संभालने को संकेत करता है। एक और परिवर्तन भी महत्वपूर्ण है: यूसुफ़ के समक्ष नम्रतापूर्वक झुकने की बजाए, जैसा उन्होंने पहले दोनो

अवसरों पर किया था (42:6; 43:26, 28), उसके भाई **उसके सामने भूमि पर गिर पड़े**। अब वे शिष्ट परदेशी होने का नाटक नहीं कर रहे थे; अब वे हताश पुरुष थे जिन्हें दया की आवश्यकता थी, न कि कानून की माँग के अनुसार कठोर दण्ड की।

आयत 15. यूसुफ़ ने उन से प्रश्न किया: **"तुम लोगों ने यह कैसा काम किया है? क्या तुम न जानते थे, कि मुझ सा मनुष्य शकुन विचार सकता है?"** शासक उन्हें एहसास करवा रहा था कि वे लोग उसके सामने कैसे असमर्थ हैं। उन्हें एहसास था कि चाँदी के कटोरे को चुराने के आरोप से अपने आप को बचाने में वे कितने असहाय हैं; वे बस इस मिस्री शासक से न्याय की बजाए क्षमा की याचना करने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं कर सकते थे।

आयत 16. यहूदा ने भाइयों की ओर से कहा, क्योंकि उसने ही याकूब से कहा था, "मैं उस [बिन्यामीन] का जामिन होता हूं" (43:9)। उसके पास अपने बचाव के लिए कुछ नहीं था; वह शासक से, सिवाए इस दीन प्रश्न के: **"हम क्या कहकर अपने को निर्दोष ठहराएं?"** और कुछ भी नहीं **कह** सकता था। यहूदा द्वारा प्रयोग किया किया गया इब्रानी शब्द जिसका अनुवाद "निर्दोष" हुआ है, (צָדַק, *सादेक)* इस पुस्तक में उसके पूर्व प्रयोग को स्मरण करवाता है, जब उसने तामार के लिए कहा था कि "वह तो मुझ से कम दोषी *['सादेक]* है" (38:26)।

इस अपराध से निर्दोष होने पर भी, यहूदा ने एक व्यकत करने वाला वाक्य कह डाला: **"परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म को पकड़ लिया है।"** इसे वज़ीर के कटोरे को चुराने का दोषी होने को स्वीकार करने वाला भी समझा जा सकता है, और कोई भी मिस्री इसे ऐसा ही समझता। लेकिन यहूदा, इससे भी बढ़कर एक अपराध का अंगीकार कर रहा था जो उसे कुछ समय से परेशान कर रहा था: अपने भाई यूसुफ़ को दासत्व में बेच देना। मिस्र में अपनी पहली यात्रा के समय से ही वे भाई सामूहिक रूप से पछतावे का अनुभव कर रहे थे जो मिस्री शासक द्वारा उनसे कठोर व्यवहार के कारण आया था। उन्होंने कहा था, "नि:सन्देह हम अपने भाई के विषय में दोषी हैं, क्योंकि जब उसने हम से गिड़गिड़ा के विनती की, तौभी हम ने यह देखकर, कि उसका जीवन कैसे संकट में पड़ा है, उसकी न सुनी; इसी कारण हम भी अब इस संकट में पड़े हैं" (42:21)। संक्षिप्त में, यहूदा ने उनके सामूहिक दोष का अंगीकार कर लिया था; और निराशा सहित कहा, "**हम, और जिसके पास कटोरा निकला वह भी, हम सब के सब अपने प्रभु के दास ही हैं।**"

आयत 17. यूसुफ़ ने यहूदा की विनती को कि जो एक (बिन्यामीन) ने किया है उसके लिए सभी भाइयों को दण्डित किया जाए, अस्वीकार कर दिया। इसकी बजाए उसने कहा, **"ऐसा करना मुझ से दूर रहे। जिस जन के पास कटोरा निकला है, वही मेरा दास होगा।"** दास बनाना और दोषी के साथ ही निर्दोष को भी दण्डित करना ईश्वरीय नियम का उल्लंघन होता। न्याय केवल दोषी को ही दण्ड दिए जाने की माँग करता है, और यूसुफ़ शेष भाइयों को भी उनके भाई के कारण दोषी मानना अस्वीकार कर रहा था। जो यूसुफ़ जानना चाहता था वह था कि

क्या वे उसके विरुद्ध किए गए पाप के लिए वास्तव में खेदित थे कि नहीं, इसलिए वह उन्हें उस ही स्थिति का अनुभव करवा रहा था जो उसने बहुत वर्ष पहले अनुभव की थी। अब जब यह चुनाव उनके समक्ष था, तो क्या वे बिन्यामीन को छोड़ देंगे, और स्वतंत्र पुरुषों के समान वापस घर लौट जाएंगे, जबकि उनके पिता के सबसे छोटे पुत्र को दास बनकर मिस्र में ही रह जाना पड़ेगा? इस निर्णायक मुद्दे के उत्तर की ओर अग्रसर होते हुए, यूसुफ़ ने शेष भाइयों के सामने जटिल प्रस्ताव रखा: **"तुम लोग अपने पिता के पास कुशल क्षेम से चले जाओ।"** जैसा कि पहले ही संकेत किया जा चुका था, जिसके पास कटोरा था उसे ही पीछे रहना था।

यहूदा की यूसुफ़ से निःस्वार्थ याचना (44:18-34)

18तब यहूदा उसके पास जा कर कहने लगा, "हे मेरे प्रभु, तेरे दास को अपने प्रभु से एक बात कहने की आज्ञा हो, और तेरा कोप तेरे दास पर न भड़के; तू तो फ़िरौन के तुल्य है। 19मेरे प्रभु ने अपने दासों से पूछा था, 'क्या तुम्हारे पिता वा भाई हैं?' 20और हम ने अपने प्रभु से कहा, 'हां, हमारा बूढ़ा पिता है, और उसके बुढ़ापे का एक छोटा सा बालक भी है, परन्तु उसका भाई मर गया है, इसलिए वह अब अपनी माता का अकेला ही रह गया है, और उसका पिता उस से स्नेह रखता है।' 21तब तू ने अपने दासों से कहा था, 'उसको मेरे पास ले आओ, जिस से मैं उसको देखूं' 22तब हम ने अपने प्रभु से कहा था, 'वह लड़का अपने पिता को नहीं छोड़ सकता; नहीं तो उसका पिता मर जाएगा' 23और तू ने अपने दासों से कहा, 'यदि तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे संग न आए, तो तुम मेरे सम्मुख फिर न आने पाओगे' 24इसलिए जब हम अपने पिता तेरे दास के पास गए, तब हम ने उस से अपने प्रभु की बातें कहीं। 25तब हमारे पिता ने कहा, 'फिर जा कर हमारे लिए थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ' 26हम ने कहा, 'हम नहीं जा सकते, हां, यदि हमारा छोटा भाई हमारे संग रहे, तब हम जाएंगे: क्योंकि यदि हमारा छोटा भाई हमारे संग न रहे, तो उस पुरूष के सम्मुख न जाने पाएंगे' 27तब तेरे दास मेरे पिता ने हम से कहा, 'तुम तो जानते हो कि मेरी स्त्री से दो पुत्र उत्पन्न हुए। 28और उन में से एक तो मुझे छोड़ ही गया, और मैं ने निश्चय कर लिया, कि वह फाड़ डाला गया होगा; और तब से मैं उसका मुंह न देख पाया 29अतः यदि तुम इस को भी मेरी आंख की आड़ में ले जाओ, और कोई विपत्ति इस पर पड़े, तो तुम्हारे कारण मैं इस पक्के बाल की अवस्था में दुःख के साथ अधोलोक में उतर जाऊंगा।' 30इसलिए जब मैं अपने पिता तेरे दास के पास पहुंचूं, और यह लड़का संग न रहे, तब, उसका प्राण जो इसी पर अटका रहता है, 31इस कारण, यह देखके कि लड़का नहीं है, वह तुरन्त ही मर जाएगा। तब तेरे दासों के कारण तेरा दास हमारा पिता, जो बुढ़ापे की अवस्था में है, शोक के साथ अधोलोक में उतर जाएगा। 32फिर तेरा दास अपने पिता के यहां यह कहके इस लड़के का जामिन हुआ है, 'यदि मैं इस को तेरे पास न पहुंचा दूं, तब तो मैं सदा के लिए तेरा

अपराधी ठहरूंगा' 33इसलिए अब तेरा दास इस लड़के के बदले अपने प्रभु का दास हो कर रहने की आज्ञा पाए, और यह लड़का अपने भाइयों के संग जाने दिया जाए। 34क्योंकि लड़के के बिना संग रहे मैं क्योंकर अपने पिता के पास जा सकूंगा; ऐसा न हो कि मेरे पिता पर जो दुःख पड़ेगा वह मुझे देखना पड़े।"

आयत 18. यहूदा की आरंभिक याचना के साथ बिन्यामीन को मिस्र में आजीवन दासत्व से बचाने का ज़ोरदार आवेदन आरंभ हुआ। यह उत्पत्ति की पुस्तक में दर्ज सबसे लंबा व्याख्यान है; इस में यहूदा ने शासक से उनके पिता याकूब पर दया करने की याचना की। इस कथन का अधिकांश भाग उसकी शासक के साथ तथा अपने पिता के साथ हुए वार्तालाप की पुनःआवृति है। जब यहूदा ने शासक (यूसुफ़) को संबोधित किया तो उससे बहुत ही आदरपूर्ण शब्दों के साथ, इस प्रकार बात की: **"हे मेरे प्रभु, तेरे दास को अपने प्रभु से एक बात कहने की आज्ञा हो, और तेरा कोप तेरे दास पर न भड़के; तू तो फ़िरौन के तुल्य है"** (देखें 41:39-44)।

आयत 19. यहूदा ने शासक को स्मरण करवाया कि मिस्र की उनकी पहली यात्रा के समय, उसने उनके बारे में जानकारी ली थी, **"क्या तुम्हारा पिता वा** [कोई अन्य] **भाई हैं?"** यहाँ शब्द "पिता" (אָב, *अब)* महत्वपूर्ण है: यहूदा ने इसे अपने कथन में चौदह बार प्रयुक्त किया है। इसे बारंबार दोहराने का तात्पर्य शासक तक उसके निर्णय के उनके पिता पर होने वाले प्रभाव को पहुँचाना था।

आयत 20. याकूब और बिन्यामीन को यहाँ **वृद्ध पिता तथा उसके बुढ़ापे का छोटा बालक** कहा गया है। बिन्यामीन का यह "छोटा बालक" (יֶלֶד, *येलेद)* कहे जाने का अर्थ है कि उसने याकूब के "बुढ़ापे में" जन्म लिया था; इससे यह गलत अर्थ नहीं लगाना चाहिए कि वह अभी भी छोटा बालक ही था। इसके विपरीत, वह एक जवान पुरुष था जो, जब यहूदा ने यह शब्द कहे, आयु में संभवतः तीस के दशक के आरंभिक वर्षों में रहा होगा। यहाँ पर NRSV इस अनुवाद के द्वारा "हमारा पिता है, एक वृद्ध पुरुष, और एक जवान भाई, उसके बुढ़ापे की सन्तान," NASB की कठिनाइयों से बची हुई है। यहूदा का अपने पिता की वृद्धावस्था पर तथा बिन्यामीन की बाल्यावस्था पर ज़ोर देना, मिस्री शासक से दया पाने का प्रयास था, वास्तविकता में जिसकी कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि यूसुफ़ इन तथ्यों को पहले ही से जानता था (43:27-29)।

व्याख्यान आगे बढ़ा: **"परन्तु उस** [बिन्यामीन] **का भाई मर गया है, इसलिए वह अब अपनी माता का अकेला ही रह गया है, और उसका पिता उस से स्नेह रखता है।"** शीघ्र ही यहूदा को यूसुफ़ की मृत्यु हो जाने के उसके अनुमान के गलत होने का पता चलने वाला था (45:3)।

आयत 21. यूसुफ़ द्वारा ली गई भाइयों की परीक्षा की कुँजी उसकी माँग थी कि वे बिन्यामीन को मिस्र **ले कर आएं**, जिससे कि वह **उसे देख सके** और जान सके कि वह जवान पुरुष जीवित तथा सकुशल था। यह उसके द्वारा उनके दावों की सत्यता को जाँचने की एक विधि थी (42:20)।

आयत 22. भाइयों ने यूसुफ़ की माँग को, यह कह कर कि **"वह लड़का अपने पिता को नहीं छोड़ सकता; नहीं तो उसका पिता मर जाएगा"** बदलने का प्रयास किया था। ये शब्द स्वयं याकूब द्वारा दी गई चेतावनी की प्रतिध्वनि थे। उसने अपने पुत्रों से कहा था, यदि मिस्र की यात्रा में बिन्यामीन को कोई हानि हुई, तो इससे "मैं इस बुढ़ापे की अवस्था में शोक के साथ अधोलोक में उतर जाऊंगा" (42:38)।

आयत 23. यहूदा ने मिस्री हाकिम को उसकी अन्तिम शर्त को स्मरण करवाया: **"यदि तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे संग न आए, तो तुम मेरे सम्मुख फिर न आने पाओगे"** (देखें 43:3-5 पर दी गई टिप्पणियाँ)।

आयतें 24-26. यहूदा ने शासक के शब्दों और भाइयों के पहली बार मिस्र आने की घटनाओं को दोहराने के पश्चात, कनान में यूसुफ़ को दिए गए विवरण को बताया। सर्वप्रथम, उन्होंने (मिस्री) **प्रभु की बातें बताईं** (44:24); लेकिन कुछ समय के पश्चात जब उनकी भोजन वस्तु घटने लगी, तो अन्ततः उनके **पिता** को मानना पड़ा और उनसे कहा, **"फिर जा कर हमारे लिए थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ"** (44:25)। उन्होंने याकूब को स्मरण करवाया कि शासक ने सबसे छोटे भाई के बिना मिस्र वापस न आने की चेतावनी दी थी (44:26)। उन्होंने याकूब को समझाया था कि यूसुफ़ के **सम्मुख जाने** के लिए उनके साथ बिन्यामीन की उपस्थिति अनिवार्य थी। यदि वे जाकर कुछ भोजन वस्तु खरीदने न पाए तो मिस्र की उनकी लंबी यात्रा व्यर्थ ठहरेगी और सारा परिवार नाश होने के खतरे में आ जाएगा।

आयतें 27-29. यहूदा ने फिर उनके पिता का अपनी प्रिय **पत्नी** राहेल से जन्मे अपने **दोनों अन्तिम पुत्रों** को खो देने के भय के बारे में बताया (44:27)। उसने मार्मिक रीति से बयान किया कि कैसे उन दोनों में से बड़ा पुत्र अपने पिता के **पास से गया** था। बाद में, जब उसके पिता के सामने उसके पुत्र का खून में सना वस्त्र प्रस्तुत किया गया, तो उसका निष्कर्ष था, **"मैं ने निश्चय कर लिया, कि वह फाड़ डाला गया होगा"** (44:28; देखें 37:31-33)। उस दिन तक उसने कोई प्रमाण नहीं **देखा** था कि यूसुफ़ अभी भी जीवित होगा। यहूदा ने मिस्र के लिए उनके कूच करने से पहले कहे गए उनके पिता के अन्तिम शब्दों को दोहराया: **"इसलिए यदि तुम इस को भी मेरी आंख की आड़ में ले जाओ, और कोई विपत्ति इस पर पड़े, तो तुम्हारे कारण मैं इस पक्के बाल की अवस्था में दुःख के साथ अधोलोक में उतर जाऊंगा"** (44:29; देखें 42:38)।

आयतें 30, 31. मिस्री शासक से यहूदा की अन्तिम याचना उनके वृद्ध पिता के शारीरिक तथा मानसिक रीति से सकुशल रहने पर आधारित थी। उसने कहा, "[यदि] **जब मैं अपने पिता तेरे दास के पास पहुंचूं, और यह लड़का संग न रहे, तब, उसका प्राण जो इसी पर अटका रहता है, ... वह तुरन्त ही मर जाएगा।**" यहूदा का अपने पिता के जीवन के लिए यह भय और चिंता कोई अतिश्योक्ति नहीं थी। उसका विश्वास था कि याकूब अपने सबसे छोटे पुत्र के वियोग को सहन नहीं कर पाएगा। बिन्यामीन के लिए याकूब का जो प्रेम था वह इस अभिव्यक्ति

से स्पष्ट है "उसका प्राण जो इसी पर अटका रहता है।" यही इब्रानी शब्द इससे मिलते-जुलते एक और कथन 1 शमूएल 18:1 में हैं: "तब योनातान का मन दाऊद पर ऐसा लग गया, कि योनातान उसे अपने प्राण के बराबर प्यार करने लगा।"

आयत 32. इस भावनात्मक कहानी के पात्रों के मुख्य संवाद को दोहराने के पश्चात, पहली बार यहूदा ने अपने पिता के सकुशल रहने में अपने योगदान का उल्लेख किया। पहली बार उसने शासक पर प्रकट किया कि वह अपने **पिता के समक्ष इस लड़के का जामिन हुआ है**; यदि वह उसे सकुशल घर **लौटा नहीं लाता** है, तो **वह जीवन भर** [अपने] **पिता के सामने इस बात का दोषी रहेगा** (43:9)।

आयत 33. निष्कर्ष में, यहूदा ने अपने आप को बिन्यामीन के स्थान पर अर्पित करने का प्रस्ताव किया। उसका अनुग्रहपूर्ण अनुरोध था **"अब तेरा दास इस लड़के के स्थान पर अपने प्रभु का दास हो कर रहने की आज्ञा पाए, और यह लड़का अपने भाइयों के संग जाने दिया जाए।"** उसकी याचना थी कि लड़के को उसके भाइयों के साथ कनान में उनके पिता के पास जाने दिया जाए। यह उदार प्रस्ताव यहूदा में आए वास्तविक परिवर्तन को प्रतिबिंबित करता है (देखें 37:26-28)। अपने जीवन में नैतिकता की पराकाष्ठा पर यहूदा विनती करता है कि उसे दास बना लिया जाए जिससे कि बिन्यामीन स्वतंत्र किया जा सके। यह बात पुराने नियम में अभूतपूर्व है।

आयत 34. यहूदा ने एक प्रश्न के साथ स्माप्त किया: **"क्योंकि लड़के के बिना संग रहे मैं क्योंकर अपने पिता के पास जा सकूंगा; ऐसा न हो कि मेरे पिता पर जो दुःख** ['दुर्गति'; NIV] **पड़ेगा वह मुझे देखना पड़े?"** इस निःस्वार्थ क्रीया ने दिखाया कि यहूदा बिन्यामीन और अपने पिता के बारे में अपने जीवन और स्वतंत्रता से बढ़कर सोचता था। इसका अर्थ यह भी था कि वह कनान में उसकी अपनी सन्तान के बारे में भूल जाने को भी तैयार था (46:12), जिन्हें संभवतः वह फिर कभी नहीं देखने पाएगा, जिस से कि उसके पिता को बिन्यामीन को खोने का दुःख न झेलना पड़े। यहूदा की प्रतिक्रिया ने यूसुफ़ को वह बता दिया जिसे वह जानना चाह रहा था।

अनुप्रयोग

ईश्वरीय परीक्षाएं (अध्याय 44)

यद्यपि बहुत कम ही विद्यार्थियों को परीक्षा देना पसन्द होता है, फिर भी शिक्षण प्रक्रिया में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है; परीक्षाएं विद्यार्थियों को ज्ञान के और अधिक ऊँचे स्तर पर जाने के लिए प्रेरित करती हैं। इसी प्रकार से, जिन परीक्षाओं का हमें जीवन में सामना करना पड़ता है वे परमेश्वर के बार में हमारी समझ को और अधिक बढ़ा सकती हैं। वे उस में और अधिक गहरा विश्वास स्थापित करने में हमारी सहायक हो सकती हैं।

परमेश्वर के लोगों की कभी कभी कठोर और अनपेक्षित विधियों से परीक्षा

होती है। अब्राहम और सारा को यह विश्वास रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा कि परमेश्वर उनके बुढ़ापे में उन्हें प्रतिज्ञा की हुई सन्तान देगा (16:1-6; 17:1, 4-8, 15-19; 18:1, 2, 9-15)। इससे भी बड़ी परीक्षा तब आई जब इसहाक किशोरावस्था में था और परमेश्वर ने अब्राहम को आज्ञा दी कि वह उसे मोरिय्याह पहाड़ पर बलिदान करके चढ़ा दे (22:1, 2)। इस समय तक अब्राहम विश्वास तथा आज्ञाकारिता में इतना परिपक्व हो चुका था कि वह अपने पुत्र को बलिदान करने के लिए तैयार हो गया। उसे विश्वास था कि यदि उसने ऐसा किया, तो परमेश्वर इसहाक को मृतकों में से फिर जिला उठाएगा (इब्रा. 11:17-19)। इसलिए, यह चाहे जितना भी कठिन रहा हो, अब्राहम ने छुरा उठाया और वह उसे अपने बेटे की छाती में घोंपने ही वाला था, जब स्वर्गदूत ने उसे ऐन समय पर रोक दिया (22:9-18)।

ईश्वरीय परीक्षा के अन्य उदाहराण इस्राएलियों के साथ के हैं। अब्राहम से विपरीत, अधिकांशतः वे परीक्षा में असफल रहे, उन्होंने विश्वास की घटी दिखाई, परमेश्वर के विरुद्ध बलवा किया, और दस आज्ञाओं की वाचा की अनाज्ञाकारिता की जिसका पालन करने की उन्होंने शपथ खाई थी (निर्गमन 24:1-8)। मूसा ने कहा, "स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिए ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा कर के यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा वा नहीं" (व्यव. 8:2)। पुराने नियम के इतिहास की त्रासदी यह है कि जब भी परमेश्वर ने इस्राएलियों की आज्ञाकारिता की परीक्षा ली वे उसमें सदा ही बुरी तरह से असफल रहे।[4]

परमेश्वर ने यूसुफ़ के वृतांत में परीक्षा का उससे भिन्न मार्ग अपनाया जो उसने अब्राहम तथा मूसा के लिए अपनाया था। विश्वास के पहले नायकों से परमेश्वर ने व्यक्तिगत तौर पर बात की, और उन्होंने उसके सन्देश को लोगों तक पहुँचा दिया। लेकिन परमेश्वर ने याकूब की किसी भी सन्तान से व्यक्तिगत बात नहीं की; परन्तु, उसने ऐतिहासिक परिस्थितियों के द्वारा यूसुफ़ के भाइयों की परीक्षा लेने का कार्य किया। इन सभी परीक्षाओं में परमेश्वर का उद्देश्य छुटकारा देने का था, परन्तु वे वृतांत भिन्न प्रकार से विकसित हुए।

अब्राहम, मूसा, और इस्राएल के साथ कठोर परीक्षाएं परमेश्वर के प्रति उनके विश्वास तथा समर्पण को और गहरा करने तथा उन्हें आज्ञाकारिता की ओर ले जाने के लिए थीं। नए नियम में परमेश्वर के लोगों की कहानी भी इसी नमूने के अनुसार है क्योंकि मसीहियों के विश्वास और आज्ञाकारिता को यहूदी तथा रोमी अधिकारियों द्वारा सताए जाने से परखा गया। आरंभिक समय में जो परिवर्तित हुए थे उन्हें भिन्न स्थानों एवं ऐतिहासिक संदर्भों में उपद्रवी भीड़ का सामना करना पड़ा (देखें प्रेरितों, 2 कुरिन्थियों, फिलिप्पियों, 2 तिमुथियुस, प्रकाशितवाक्य)। ये सभी कष्टप्रद परीक्षाएं थीं; और प्रभु के भाई याकूब ने उन्हें "विश्वास का परखा जाना" जिस से "धीरज उत्पन्न" होता है कहा (याकूब 1:3)। दूसरे शब्दों में, परीक्षाएं चरित्र निर्माण की एक विधि हैं; वे प्रतिरोध में स्थिरता

उत्पन्न करती हैं। यद्यपि यह कठिन बात है, परखे जाना मसीही परिपक्वता की ओर ले जा सकता है।

उत्पत्ति के वृतांत में, वह कोई मूर्तिपूजक अन्यजाति सरकार की या परदेशी लोगों की उपद्रवी भीड़ नहीं थी जिसने याकूब की सन्तान का विरोध तथा परीक्षा की; वरन स्वयं यूसुफ़ ही अपने भाइयों की परीक्षा लेने का ईश्वरीय माध्यम बन गया जिससे याकूब के समस्त परिवार में पश्चाताप एवं पारस्परिक मेल-मिलाप हो सके। परिणामस्वरूप, अन्ततः वे अब्राहम को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास रखेंगे और मिस्र को चले जाएंगे (15:13-16), जहाँ रहते हुए वे बढ़ने पाएंगे जब तक कि निर्गमन का समय न हो जाए। जब भाई मिस्र वापस आए, मिस्री शासक (यूसुफ़) ने उनका स्वागत किया और उन्हें बड़े भोज के लिए उसके घर आमंत्रित किया गया (43:31-34)। प्रतीत होता है कि, क्योंकि "उन्होंने उसके संग मनमाना खाया पिया," इसलिए वे पूरी तरह से सचेत नहीं थे। संभवतः इसी कारण, वे अनभिज्ञ थे कि यूसुफ़ के अधिकारी ने उनके बोरे अन्न से भरे, उनका रुपया लौटा दिया, और उसका चाँदी का कटोरा बिन्यामीन के बोरे में डाल दिया (44:1, 2)। रात्रि के विश्राम के पश्चात, जब भाइयों को कनान लौट जाने के लिए विदा किया गया, उन्हें सब कुछ ठीक प्रतीत हुआ। उन्हें प्रत्याशा थी कि वे अपने पिता तथा शेष परिवार को आनन्द देने पाएंगे क्योंकि उनकी यात्रा सफल रही थी।

वे शहर से बाहर निकले ही थे कि यूसुफ़ के अधिकारी ने उन्हें पकड़ लिया और उन पर चोरी करने का दोष लगाया। उसने कहा कि उन्होंने उसके स्वामी के भले अतिथिसत्कार के बदले में शकुन विचारने के उसके कटोरे की चोरी की है (44:4, 5)। यह गंभीर दोष था। प्रचिलित अन्धविश्वास के अनुसार, वज़ीर को उस कटोरे की, महत्वपूर्ण राज्कीय मुद्दों पर फ़िरौन को सही सलाह देने के लिए आवश्यकता होती थी। निःसन्देह, भाइयों ने अपने निर्दोष होने की दोहाई दी और इस बात के लिए भी सहमत हो गए कि जिस किसी के पास वह कटोरा मिले वह मृत्यु दण्ड के योग्य होगा, और शेष सभी उसके स्वामी के दास हो जाएंगे। ऐसा कठोर प्रण करना गलती थी, परन्तु ये पुरुष लाबान से उतावलेपन में किए गए उनके पिता के प्रण से प्रभावित रहे होंगे। उसने, जिसने भी लाबान के गृहदेवता चुराए हों उसे मृत्यु दण्ड देने का प्रण लिया था, इस बात से अनभिज्ञ कि राहेल ने उन देवताओं को काठी के नीचे रखा हुआ था (31:32)। क्योंकि वे पाए नहीं गए, इसलिए राहेल दण्ड से बच गई।

लेकिन वह चाँदी का कटोरा बिन्यामीन के बोरे से बरामद हो गया, चाहे उसे चुराया नहीं गया था। उसे तथा उसके भाइयों को शहर वापस लौटना पड़ा तथा मिस्री शासक के सामने न्याय के लिए खड़ा होना पड़ा। जबकि बिन्यामीन कटोरे को लेने का दोषी प्रतीत हो रहा था, वह अधिकारी भाइयों के न्याय के विषय उनसे अधूरा ही सहमत हुआ। उसने दण्ड को घटाते हुए दोषी को दासत्व तथा निर्दोषों को स्वतंत्र रहने की बात कही (44:10)।

परमेश्वर की परीक्षाएं पाप के कष्ट को प्रकट करके पश्चाताप और मेल-

मिलाप के लिए द्वार खोल सकती हैं। चाँदी के कटोरे की खोज सबसे बड़े भाई के बोरे से आरंभ हुई थी और सबसे छोटे तक जारी रही। संभवतः इससे भाइयों को अचरज हुआ (43:33; 44:12); परन्तु जैसे खोज जारी रही, उनकी प्रतिक्रिया निराशा और वेदना में परिवर्तित हो गई। जब उन्होंने अपने बोरे गदहों पर लादे और शहर में यूसुफ़ के घर की ओर चले (44:13), तो उनकी यह यात्रा प्रातः के आनन्द से भरे जलूस के समान नहीं वरन मृत्यु दण्ड पाने वालों की यात्रा के समान थी।

जब उन्होंने मिस्री शासक के सामने पहुँच कर दण्डवत की,[5] तो उसने उन से पूछा, "तुम लोगों ने यह कैसा काम किया है? क्या तुम न जानते थे, कि मुझ सा मनुष्य शकुन विचार सकता है?" (44:15)। उसका कहना था कि उसे धोखा देने का प्रयास व्यर्थ है। इस समय तक, यहूदा भी समझ गया था कि छल करना निरर्थक है, और उसके पास कोई झूठ शेष भी नहीं थे। उसने अपने पिता से प्रतिज्ञा की थी कि वह बिन्यामीन का उत्तरदायित्व लेगा; इसलिए उसने सामान्यतः सभी भाइयों के लिए और विशेषकर बिन्यामीन के लिए बोलने को अपने ऊपर लिया।

जब भाई शहर को लौट रहे थे, तब यहूदा परमेश्वर से सहायता तथा क्षमा के लिए प्रार्थना कर रहा होगा। उसने सत्य बताने का निर्णय किया, और उसके बोलने में दृढ़ता थी जब वह अपने और अपने भाइयों के पाप अंगीकार करने लगा। उसने अपने दोषी विवेकों को प्रगट किया जिन्हें उन्होंने याकूब को दासत्व में बेच देने के समय से छिपाए रखने का प्रयास किया था। अब और किसी बहाने या छलावे के असत्य का सहारा लिए बिना, यहूदा ने स्वीकार कर लिया, "परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म को पकड़ लिया है।" उसने स्वीकार कर लिया कि वे शासक के दास होने के योग्य हैं (44:14-16)।

जो वास्तव में पश्चाताप करते हैं और अपने पापों को मान लेते हैं वे जीवन का भिन्न मार्ग अपना कर अधिक अच्छे लोग हो जाते हैं। यहूदा ने अपना या अपने भाइयों का बचाव करने का कोई और प्रयास नहीं किया, परन्तु उसका कथन "परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म को पकड़ लिया है" (44:16) केवल बोरों में पाए गए रुपये या चाँदी के कटोरे के पाए जाने ही के संबंध में नहीं था। वरन, मुख्यतः यह उन पापों के विषय में था जिन्हें वे दो दशकों से छिपाए हुए थे, विशेषकर वह द्वेष जिसके कारण उन्होंने यूसुफ़ को दासत्व में बेचा (37:4, 8, 26-28)। इसमें उनके द्वारा याकूब के मन को वह दुःख दिया जाना भी सम्मिलित था जो उनके द्वारा उसे उसके पुत्र यूसुफ़ के देहांत का विश्वास दिलाने से हुआ था (37:31-35)। मिस्र की अपनी प्रथम यात्रा में, उस व्यवहार के लिए जो उन्होंने, दोनों, याकूब और यूसुफ़ के साथ किया था अपने दोषी होने के भाव को व्यक्त किया था; वस्तुतः, इस के कारण उस मिस्री शासक (यूसुफ़) को आँसू छिपाने के लिए अपना मुँह मोड़ना पड़ा था (42:21-24)।

लेकिन फिर भी इससे पहले कि यूसुफ़ अपने आप को अपने भाइयों पर प्रगट करता, वह बिन्यामीन के प्रति उनके वास्तविक व्यवहार को देखना चाहता था।

इस कारण उसने कहा कि शेष सभी भाई कनान में अपने घर जा सकते हैं, परन्तु बिन्यामीन को उसका दास बनकर मिस्र में ही रहना होगा (44:17)। क्या वे बिन्यामीन को भी वैसा ही निर्मोही बनकर मिस्र के दासत्व में छोड़ देते जैसा उन्होंने यूसुफ़ को दासत्व में बेचते समय किया था? उत्तर आने में कोई विलंब नहीं हुआ। जैसे ही यहूदा ने घोषणा सुनी, वह तुरंत ही एक मार्मिक वक्तव्य लेकर बिन्यामीन के बचाव में आया। उस में, उसने परिवार के इतिहास का पुनःअवलोकन किया, और यूसुफ़ को वे तथ्य बताए जिन्हें वह पहले ही से जानता था। लेकिन यहूदा ने याकूब के अपने सबसे छोटे पुत्र के प्रति प्रेम पर बल दिया और कहा कि यदि बिन्यामीन अपने भाइयों के साथ मिस्र से लौट कर नहीं आया तो उनका पिता अवश्य ही मर जाएगा। इस जाँच के द्वारा यूसुफ़ ने यह भी जान लिया कि भाई बिन्यामीन को दोषी नहीं मानते थे, और न ही उन्होंने झूठे ही उसे अपने ऊपर आई इन सभी कठिनाइयों के लिए दोषी ठहराया। यह प्रगट था कि वे वास्तव में उसके लिए चिंतित थे और उससे प्रेम का व्यवहार रखते थे, इस बात की परवाह किए बिना कि वह चाँदी का कटोरा उसके बोरे में कैसे आया। यदि अपने सबसे छोटे भाई के प्रति उनका रवैया कठोर और क्षमा रहित होता, तो वे यूसुफ़ अथवा परमेश्वर से क्षमा पाने के अयोग्य ठहरते।[6]

यूसुफ़ के लिए सबसे अधिक विश्वास दिलाने वाली बात और हृदय छू लेने वाला प्रमाण था यहूदा का बिन्यामीन का जामिन होना। उसी ने भाइयों को यूसुफ़ को व्यापारियों के काफ़िले को बेचने के लिए तैयार किया था, परन्तु अब वह अपने बच्चों, पिता, और परिवार को छोड़ने तथा दास होने के लिए तैयार था जिससे कि बिन्यामीन वापस याकूब के पास घर जा सके।

अध्याय 44 के अन्त में आकर, याकूब और उसके पुत्रों का भविष्य अभी भी अनिश्चित था; परन्तु परिवार की समस्याओं का समाधान अगले अध्याय में तुरंत ही दिया गया है। कहानी के उस भाग में पश्चाताप, क्षमा, और मिस्र में भविष्य की नई संभावनाएं सम्मिलित हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]देखें ई. ए. स्पाइसर, *जेनिसिस,* द एन्कर बाइबल, वोल. 1 (गार्डन सिटी, एन. वाय.: डबलडे & को., 1964), 333. [2]डेविड ई. औने, "डिविनेशन," *द इन्टरनैशनल स्टैन्डर्ड बाइबल एन्साईक्लोपीडिया* में, रिव. एड., एड. ज्यौफ्री डबल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैलिड्स, मिच.: वम. बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग को., 1979), 1:971-74. [3]बाद में मूसा की व्यवस्था के अन्तर्गत, भावी कहने, शकुन और अन्य मूर्तिपूजक अन्यजाति प्रथाओं को कड़ाई से प्रतिबन्धित किया गया (लैव्य. 19:26; व्यव. 18:10; देखें गिनती 23:23) क्योंकि उन से लोग भ्रष्ट होकर लोग सृष्टि के एकमात्र सार्वभौमिक प्रभु में विश्वास से दूर हो जाते थे। [4]भजन 78 इस्राएल की असफलता के बारे में विस्तृत विवरण देता है। [5]यह तीसरा अवसर था जब भाइयों ने यूसुफ़ के सामने साष्टांग प्रणाम किया (42:6; 43:26, 28; 44:14), जो उसकी भविष्यवाणी वाले स्वप्न की पूर्ति थी (37:5-11)। [6]देखें मत्ती 18:21-35 में क्षमा न करने वाले सेवक का दृष्टांत।